यीशु आश्चर्यजनक उद्धारकर्ता हैं।

इस पाठ के सम्बन्ध में:

बाइबल कुन्जियों के इस दूसरे पाठ में आपका स्वागत है। हमारा यह विश्वास है कि आपकी बाइबल के माध्यम से परमेश्वर आपसे बातें करते रहे हैं, निश्चय वह आज भी आपसे बातें करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है। आपकी सहायता के लिये पवित्र आत्मा तत्पर हैं।

आज के विषय हैं:

- **परमेश्वर चाहता है कि आप उसकी संतान हो जायें!**
- **परमेश्वर से आपकी दूरी का कारण है पाप!**
- **आप मसीह यीशु द्वारा बचाये जा सकते हैं!**

आप ऐसा कीजिये:

✔ दिये हुए अंश को पढिये और महत्त्वपूर्ण अंशों को चिन्हित कीजिये।

✔ अपनी बाइबल में संबंधित पद खोज निकालिये।

✔ उन्हें चिन्हित कीजिये।

आप जितना अधिक अध्ययन करेंगे उतना ही अधिक समझ सकेंगे

प्रभु आपको आशीष दें।

1 परमेश्वर की अभिलाषा है कि आप उनकी संतान हों

1 तीमु 2:4
प्रका 20:15
लूका 10:20
यूह 11:25

परमेश्वर वास्तव में आपको अपनी संतान बनाना चाहते हैं।

परमेश्वर एक अद्वितीय पिता हैं। उनकी कामना है कि प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बालक उनके निकट आये और पापमुक्त हो जाये। वह चाहते हैं कि जीवन की पुस्तक में आपका नाम लिखा जाये और आपको अनन्त जीवन प्राप्त हो जाये। तब यदि आज आपकी मृत्यु भी हो जाये, आपकी आत्मा नर्क में नहीं, स्वर्ग में प्रवेश कर सकेगी। आज के पाठ का लक्ष्य है कि आप यह अच्छी रीति से समझ लें कि परमेश्वर ने आपको स्वीकार कर लिया है। किन्तु इसके पूर्व यह आवश्यक है कि आप जीवन को परिवर्तित कर सकने वाले बाइबल के कुछ सत्यों को समझ लें।

परमेश्वर आपके शत्रु से आपकी रक्षा करना चाहते हैं।

आपका और परमेश्वर का एक शत्रु है। वह सदैव परमेश्वर के विरुद्ध ही रहता है। उसका

परमेश्वर की अभिलाषा है कि आप उनकी संतान हों (जारी है)

यूह 10:10

नाम शैतान है। उसके नाम का अर्थ है आरोप लगाने वाला। शैतान का यह प्रयास रहता है कि वह आपको स्वतंत्र, प्रसन्न तथा परमेश्वर की स्थायी संतान हो जाने से रोक दे। उसकी क्रियाशीलता का एकमात्र अभिप्राय यह है कि वह चोरी, हत्या और विनाश करे। किन्तु चिन्ता न कीजिये, परमेश्वर जानते हैं कि शैतान को वश में कैसे किया जाता है। मसीह यीशु ने जय पहले ही प्राप्त कर ली है और आपके लिये अनन्त जीवन उपलब्ध है, यह अनन्त जीवन सभी के लिये है। आपके लिये भी इसे समझना आवश्यक है कि आप जान लें कि क्या हुआ जो शैतान ने मानव पर अधिकार प्राप्त कर लिया। इसे समझने के पश्चात आप यह जान जायेंगे कि आप शैतान की शक्ति से कैसे पूर्णतः स्वतंत्र हो सकते हैं। इस अंश को आप आरंभ से अंत तक ध्यानपूर्वक पढ़ियें। तब आप यह देख सकेंगे कि आपके लिये परमेश्वर ने कैसा सुन्दर समाधान तैयार कर रखा है।

2 आरंभ में सभी कुछ बिलकुल ठीक था

उत्प 1:26,27
उत्प 1:31

(सब को पढे
उत्प 1–2)

सृष्टि के आरंभ में पाप था ही नहीं। परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री अर्थात् आदम और हव्वा की रचना की। समस्त सृजी गयी वस्तुओं में ये परमेश्वर की सर्वोत्तम कृति थे। परमेश्वर ने सृष्टि की ओर देखा कि सभी कुछ अत्यंत सुन्दर था।

परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को पूर्ण स्वतंत्रता दे रखी थी। परमेश्वर ने उन्हें एक अनुपम संसार दे रखा था और उनकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति हो रही थी। वे सुखी थे, स्वस्थ थे, उनके पास सर्वोत्तम आवास था। वाटिका के सारे फल उनके भोजन के लिये उपलब्ध थे। किन्तु सबसे महान बात यह थी कि परमेश्वर के साथ उनकी निरंतर गहन संगति हुआ करती थी। पुरुष और स्त्री परमेश्वर की संतान भी थे और उनके मित्र भी। संध्या के समय परमेश्वर उनके साथ टहला करते थे। उस स्थिति की कल्पना कीजिये जब आप एक सुंदर वाटिका में - **परमेश्वर** के साथ टहला करते है!

3 उचित अनुचित करने की स्वतंत्रता

उत्प 2:8

परमेश्वर एक अद्भुत पिता है। वह चाहते हैं कि उनकी संताने स्वतंत्र रहें; इसलिये उन्होंने अपनी संतानों को पृथ्वी पर निर्मित की गयी प्रत्येक वस्तु के उपयोग के लिये पूर्ण स्वतंत्रता दे रखी थी। सारे सुंदर वृक्ष जल के सभी झरनों और जानवरों पर उसने उन्हें पूर्ण अधिकार दे रखा था कि वे समस्त सृष्टि का आनंद ले सकें, हाँ, एक अपवाद था। उन्हें उचित–अनुचित के ज्ञान के वृक्ष के निकट जाने की अनुमति नहीं थी।

उत्प 2:17

यह वृक्ष विशिष्ट था। इसका फल खाने का परिणाम था अनन्त मृत्यु। परमेश्वर को ज्ञात था कि यह उन्हें नष्ट कर देगा, अतः वह उन्हें सुरक्षा प्रदान करना चाहते थे।

एक ही सरल साधारण नियम था, किन्तु, जब आपको नियम दिया जाता है, तो आपको आज्ञा पालन और आज्ञा उल्लंघन का अधिकार भी दिया जाता है, और इसके परिणामों के लिये आप स्वयं उत्तरदायी हो जाते हैं। अब इस घटना का दुखद अंश प्रारंभ होता है।

4 शैतान ने उन्हें मूर्ख बना दिया अतः उन्होंने पाप किया

उत्प 3:1-6

शैतान ने सर्प के शरीर में प्रवेश किया। यह उसकी योजना पूर्ति का उपयुक्त अवसर था। यदि वह आदम और हव्वा को धोखा दे सके तो उन्हें परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह के लिये प्रेरित किया जा सकता है। उसने उन्हें परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा के विपरीत विश्वास करने को उकसाया और यह लोभ भी दिलाया कि फल खाकर वे परमेश्वर जैसे हो जायेंगे। जो कुछ शैतान उनसे कह रहा था उसमें झूठ के सिवा और कुछ नहीं था। किन्तु आदम और हव्वा के अंतरमत में कुछ ऐसा था जो शैतान द्वारा सुझायी बुराई को चखने के लिये उत्सुक था; और परमेश्वर यही नहीं चाहते थे। आदम और हव्वा ने वही किया जो परमेश्वर ने उन्हें करने के लिये मना किया था। वे परमेश्वर की सारी भलाइयां भूल गये। उन्होंने सर्जक की वाणी को सुनने की अपेक्षा शैतान की वाणी सुनना उपयुक्त समझा। वे परमेश्वर से दूर हो गये। परमेश्वर उन्हें स्वतः से दूर नहीं रहने देना चाहते थे। अतः उन्हीं के भले के लिये परमेश्वर ने प्रबंध किया कि वे जीवन-वृक्ष का फल न खा सके। उनका पाप में पड़ना एक वास्तविकता हो गया और यह एक प्रलय था।

याक 1:14

5 परमेश्वर से दूरी

आदम और हव्वा को वाटिका और समस्त सुंदर वस्तुएं तुरन्त ही छोड़नी पड़ी। **सबसे दुखद परिणाम तो यह था कि परमेश्वर से उनकी संगति समाप्त हो गयी।** मृत्यु का प्रवेश हुआ, किन्तु उनकी भौतिक मृत्यु के द्वारा नहीं, वरन उनके अंतरमत में परमेश्वरीय जीवन की मृत्यु के द्वारा। मानो एक 'स्विच' बंद कर दिया गया। शैतान की युक्ति सफल हो गयी: ''बुरी इच्छा के गर्भ से पाप का जन्म होता है; और पाप विकसित होकर मृत्यु को उत्पन्न करता है।''

याक 1:15

परमेश्वर से दूरी (जारी है)

कुल 1:13,14

इफि 2:1,2

अब दो विरोधी राज्य उत्पन्न हो गये थे: परमेश्वर का और परमेश्वर के शत्रु का। परमेश्वर से अलगाव ने आदम और हव्वा को वैसे भी शत्रु-राज्य का सदस्य बना दिया था। यह था अंधकार का राज्य। बाइबल बतलाती है: ''तुम अपने अपराधों के कारण मृत थे क्योंकि उस समय तुम्हारा आचरण दुष्ट आत्मा के अनुसार था जो वायुमण्डल का शासक और अधिपति है। वह इस समय भी परमेश्वर की आज्ञा न मानने वालों के मध्य क्रियाशील है।'' आदम और हव्वा के उत्कृष्ट जीवन में परिवर्तन आ गया। कार्य कठिन हो गया, भोजन दुर्लभ, मृत्यु का शासन प्रारंभ हो गया। हव्वा के प्रथम पुत्र ने ईर्ष्यावश अपने ही छोटे भाई की हत्या कर दी। शीघ्र ही मानव का संपूर्ण विचार पापमय हो गया। उनमें यौनाचार बढ़ गया। वे अहंकार से भर गये। पाप की महामरी तीव्र गति से फैलने लगी।

उत्प 4:1-12

6 हम सब ने पाप किया है

रोम 3:23

तब से अब तक आदम की समस्त संतानें अर्थात् हम सब पाप में हैं। ''हम सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गये हैं।'' हम सभी परमेश्वर के स्तर से गिर गये हैं। यह तो आप स्वयं अपनी अंतरात्मा में अनुभव कर सकते हैं। यह तो आप पहले ही जानते हैं। अब, यदि हमें इसी स्थिति में रहने दिया जाये तो आप अनन्त मृत्यु के ग्रास हो जायेंगे जैसे आदम और हव्वा, किन्तु परमेश्वर अत्यंत भले है। शैतान का वचन अंतिम नहीं हैं। मानव को बचाने के लिये परमेश्वर ने एक योजना तैयार कर रखी थी, तथा अंतिम वचन **मसीह यीशु** है!

7 यीशु – पूर्णसमाधान!

परमेश्वर अब क्या करें? वह तो अपने मित्र, अपनी संतानों को खो चुके थे; आदम और हव्वा ने उन्हें छोड़ दिया था। उन्होनें सारी आगामी पीढ़ियों को अंधकार के राज्य में डाल दिया था। परमेश्वर को यह ज्ञात था कि कोई भी मानव अब मात्र, अपनी ही सामर्थ्य से इस राज्य से बाहर नहीं आ सकता था, और चूंकि उन्होनें पाप किया था, शैतान का उन पर अधिकार बन गया था।

यीशु आश्चर्यजनक उद्धारकर्ता हैं

केवल एक ही मार्ग!

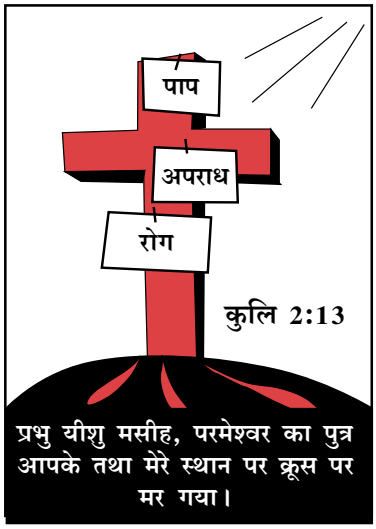

मानव को अनन्त मृत्यु से बचाने का एक – केवल एक – विकल्प था कि कोई उनका पाप अपने ऊपर ले और उन्हें छुटकारा प्रदान करे। और समस्त सृष्टि में इसके लिये उपयुक्त केवल एक ही व्यक्ति पाया गया: परमेश्वर ही के पुत्र मसीह यीशु! बाइबल से इसकी सूचना यूं दी गयी है।

यूह 3:16 **''क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उनके पुत्र मसीह यीशु पर विश्वास करेगा वह नष्ट नहीं होगा परंतु अनन्त जीवन प्राप्त करेगा।''**

स्तुति–प्रशंसा हो परमेश्वर की ! परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में भेज कर इतिहास बदल दिया। इसके परिणामस्वरूप यह अब संभव हो गया है कि हम परमेश्वर से मसीह यीशु के माध्यम से संगति कर सकें!

उद्धार

मसीह यीशु के माध्यम से परमेश्वर ने जो किया उसे ही उद्धार कहा जाता है; मसीह यीशु पूर्णतः निष्पाप थे किंतु आप के पापों को अपने ऊपर लेकर उन्होंने एक भयावह मृत्यु स्वीकार की।

2 कुरि 5:21 मसीह यीशु ने कोई पाप नहीं किया किन्तु उन्होंने आपके पाप अपने ऊपर ले लिये।

1 पत 2:24 मसीह यीशु में कोई रोग न था, किन्तु उन्होंने आपके सारे रोग अपने ऊपर ले लिये!

मसीह यीशु ने इसलिए मत्यु स्वीकार की कि आप पूर्णतः स्वतंत्र हर्षित और अत्यंत फलदायी व्यक्ति बन सकें।

मसीह यीशु आपके स्थान पर मारे गये। यह इसलिये हुआ कि वह आपको अंधकार के वश से मुक्त कर सकें कि **वह अंधकार के राज्य से आपको निकालें और ज्योति के राज्य में प्रवेश करवा दें!** पृथ्वी पर अपने जीवनकाल में वह जहाँ–जहाँ जाते थे वहाँ-वहाँ वह भूतग्रस्त लोगों को उन अशुद्ध आत्माओं से मुक्ति दिलाते जाते थे। रोगियों को रोगमुक्त कराते जाते थे। मसीह यीशु आज भी वैसे ही हैं। यदि आप इस प्रकार पीड़ित है, मसीह यीशु आपको भी मुक्त कर सकते हैं। उन्हें पुकारिये, ''प्रभु मेरी सहायता कीजिये।'' शैतान को आदेश दीजिये कि वह आपके पास न आये : इस प्रकार, शैतान! ''मसीह यीशु के नाम से, मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि मुझ से दूर हो जा ! मैं मसीह यीशु के रक्त की सुरक्षा का दावा करता हूं !'' अब आप इस जय के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दीजिये !

मरते हुए मसीह यीशु ने, आपको आदम द्वारा किये गये पाप से उत्पन्न प्रत्येक बुराई से स्वतंत्र कर दिया :

(पढिये यशा अध्याय 53)

- पाप
- रोग
- अशुद्ध आत्माएं
- वह सभी बातें जो आपको बंधन में रखती है!

बाइबल खोज

यहां दिये जा रहे हैं कुछ काम जो आप को करने हैं। इनसे आप परमेश्वर का वचन अच्छी तरह समझ सकेंगे।

अभ्यास 1: पाप क्या है?
परमेश्वर की आज्ञा न मानना ही पाप है। परमेश्वर ने (निर्गमन 20 अध्याय 3 से 17 पदों) मे जो दस आदेश दिये हैं वही हमें बतलाते हैं कि उचित क्या है, और अनुचित क्या है। लिखिये कि प्रत्येक आप पर किस प्रकार लागू होता है।

निर्गमन 20:3 ''मेरे अतिरिक्त किसी अन्य को परमेश्वर न मानना।''

निर्गमन 20:4 ''अपने लिये किसी प्राणी की मूर्तियां, आकृति न बनाना जो ऊपर आकाश में अथवा नीचे पृथ्वी पर या पृथ्वी के नीचे जल में है।''

निर्गमन 20:7 ''आपने प्रभु परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो व्यक्ति प्रभु का नाम व्यर्थ लेगा उसे प्रभु दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ेगा।''

निर्गमन 20:8-10 ''सातवां दिन प्रभु परमेश्वर का विश्राम दिवस है। उस दिन कोई कार्य न करे।'' छः दिन तो तू परिश्रम कर के अपना सब काम-काज करना! (रविवार आराधना का दिन है।)

निर्गमन 20:12 (इफिसियों 6:2,3) ''अपने माता-पिता का आदर कर जिससे तेरी आयु दीर्घ हो सके।''

निर्गमन 20:13 (मत्ती 5:22) ''हत्या न करना ।''

निर्गमन 20:14 (मत्ती 5:28) ''व्यभिचार न करना ।''

निर्गमन 20:15 (इफिसियों 4:28) ''चोरी न करना ।''

निर्गमन 20:16 (याकूब 4:11, कुलुस्सियों 3:9) ''तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।''

निर्गमन 20:17 (लूका 12:15) ''लालच न करना। न अपने पड़ोसी की पत्नी, उसके सेवक, सेविका, पशु अथवा किसी वस्तु की ।''

अभ्यास 2: पाप का मूल

कुछ और पाप हैं जो इन दस आदेशो की सूची में नहीं हैं, किन्तु सारे पाप कर्मों का उद्गम एक ही है। वह क्या है? पढ़िये यूहन्ना 16:9.

पाप से मुक्त होने के लिये आवश्यक है कि सर्वप्रथम मसीह यीशु पर विश्वास किया जाये!

अभ्यास 3: पापी कौन है?

कृपया पढ़िये रोमियों 3:23 और अपना उत्तर लिखिये।

अभ्यास 4: पाप का परिणाम क्या है?

कृपया पढ़िये रोमियों 6:23 और अपना उत्तर लिखिये।

बाइबल खोज

अभ्यास 5: परमेश्वर आपके पाप क्षमा करते हैं
पाप–क्षमा आपको मसीह यीशु के माध्यम से मिलती है। परमेश्वर की स्तुति–प्रशंसा हो। नीचे दिये गये बाइबल के पद पढ़िये और बच जाइये। **पाप क्षमा और पाप शब्दों** को रेखांकित कीजिये:

मत्ती : 1:21 (''यीशु'' नाम का अर्थ उद्धार)
''वह पुत्र को जन्म देगी। तुम उसका नाम **''यीशु''** रखना, क्योंकि कि वह अपने लोगों को उनके पापों से छुडाएगा।''

मत्ती : 26:28
''यह वाचा का मेरा रक्त है जो सब मनुष्यों के पाप-क्षमा के लिये बहाया जा रहा है।''

प्रेरितों : 10:43
''जो कोई मसीह यीशु पर विश्वास करेगा उसे मसीह यीशु के नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।''

प्रेरितों : 13:38
''भाइयों, तुम्हें विदित हो कि इन्हीं के द्वारा तुम्हें पापों की क्षमा का संदेश सुनाया जा रहा है।''

अभ्यास 6: परमेश्वर पाप से घृणा किन्तु पापी से प्रेम करते हैं।
क्या होता है जब एक पापी पश्चाताप करता है? पढ़िये लूका 15:10.

यीशु आश्चर्यजनक उद्धारकर्ता हैं

अभ्यास 7: मसीह यीशु ने आप के लिये सभी कुछ किया कि आप पाप–दंड से बच सकें !

पढ़िये 1 पतरस 2:24 और रिक्त स्थान भरिये:

वह (मसीह यीशु) स्वंय हमारे _____ को अपनी देह पर लिए हुए

_____ पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये _____ और

धार्मिकता के लिए _____ बिताएं।

यूहन्ना 1:29 में लिखा है : ''दूसरे दिन यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मसीह यीशु को अपनी ओर आते देखा तो बोले, देखो परमेश्वर का मेमना जो संसार के पाप के भार उठाकर ले जाता है।''

मसीह यीशु ''परमेश्वर का मेमना'' क्यों कहे जाते हैं? _____

_____

पढ़िये यूहन्ना 3:16, इसे कंठस्थ कीजिये और यहां लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

काम का समय !

मसीह यीशु ने आपके लिये मृत्यु स्वीकार की और वह आपका जीवन परिवर्तित कर सकते हैं!

कुल 1:14

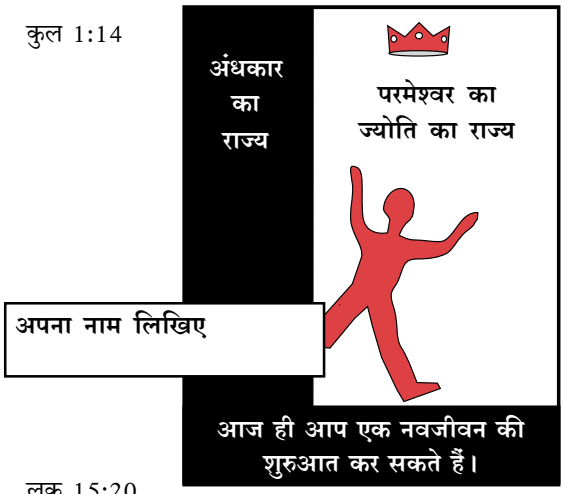

परमेश्वर यह चाहते हैं कि आप पाप-दंड से मुक्त हो जायें और स्वर्ग में आप उनके साथ निवास करें। उद्धार के विषय में जो कुछ किया जाना था वह सब शत प्रतिशत मसीह यीशु ने पूर्ण कर दिया है।

सुनिये! परमेश्वर आपको एक सुन्दर उपहार देना चाह रहे हैं। आप परमेश्वर की सन्तान बन सकते हैं। शायद आपने पहले भी उद्धार के लिये प्रार्थना की है, किन्तु आपको इसका पूर्ण निश्चय कभी नहीं हो सका कि आपको उद्धार प्राप्त हुआ भी है या नहीं। वह चाहते हैं कि आप अंतरात्मा में यह जान लें कि आप परमेश्वर की अपनी सन्तान हैं। साथ ही साथ, परमेश्वर आपको पूर्ण स्वास्थ्य भी देना चाहते हैं।

लूक 15:20

परमेश्वर सदा ही आपकी प्रतीक्षा करते रहे हैं। आप जब भी आयें, वह आप से पश्न पर प्रश्न नहीं करेंगे। प्रश्न बस एक ही होगाः ''क्या तुम्हें यह उपहार चाहिये?'' वह यह चाहते हैं कि वह आपको एक सुन्दर नया जीवन–इसी समय दे दें !

आपके करने के लिये !

- **आप परमेश्वर से बातें कीजिये – वह आपकी बातें सुनने में समर्थ हैं।**

मत्ती 7:7-8

अपने वचन में परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की है कि जब भी आप उनसे बातें करें, वह आपकी सुनेंगे। बाइबल की भाषा में इसे कहा जाता है, प्रार्थना करना।

जब आप प्रार्थना करते हैं, वह आपकी सुनते हैं और वह अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने में जुट जाते हैं।

- **परमेश्वर की वाणी सुनिये!**

प्रेरि 16:31 **''मसीह यीशु पर विश्वास करो, तो तुम उद्धार पाओगे।''**

यूह 6:37 **''उन सब को जो मेरे पिता मुझे देते हैं मेरे पास आएंगे। और जो कोई मेरे पास आयेगा, उसको मैं कभी बाहर नहीं निकालूंगा।''**

प्रका 3:20 **''देखो, मैं द्वार पर खड़ा खटखटा रहा हूं यदि कोई मनुष्य मेरा स्वर सुनकर, द्वार खोलेगा तो मैं भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।''**

यीशु आश्चर्यजनक उद्धारकर्ता हैं

आप परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए

पुराने जीवन से स्वतंत्रता

''पिता, मैं तेरे पास आता हूं। पिता, तेरी प्रतिज्ञा के लिये धन्यवाद कि तू मुझे अंधकार के राज्य से निकाल कर प्रकाश के राज्य में ले जायेगा। मैं जानता हूं मैं पापी हूं। मुझे क्षमा करें कृपया मेरे पाप क्षमा कीजिए। मैं अपने पाप और पुराना जीवन छोड़ कर आपके साथ नव-जीवन में प्रवेश पाना चाहता हूं।''

परमेश्वर का उत्तर हां !!!

परमेश्वर के उत्तर

यीशु ने ''क्रूस पर अपनी देह में हमारे पापों को ओढ़ लिया, ताकि अपने पापों के प्रति हमारी मृत्यु हो जाये और जो कुछ नेक हैं, उसके लिये हम जीयें।'' **1 पतरस 2:24**

''उसने हमारे सब पापों को पूर्ण रूप से क्षमा कर दिया। परमेश्वर ने उस अभिलेख को हमारे बीच में से हटा दिया – उसने उसे कीलों से क्रूस के द्वारा जड़कर मिटा दिया हैं। **कुलुस्सियों 2:13,14**

ऊँचे स्वर से बोलिये।

यीशु को अपने एकमात्र प्रभु के रूप में स्वीकार कीजिये।

''आज के दिन मैं यह अंगीकार करता हूं कि यीशु मसीह ही मेरा एकमात्र प्रभु है। मैं अन्य सभी देवताओं का परित्याग कर शेष जीवन के लिये यीशु की सेवकाई करना चाहता हूं।''

....

हस्ताक्षर दिनांक

परमेश्वर ''हाँ'' की पुष्टि करता है !!!

परमेश्वर की प्रतिज्ञा

''यदि तू अपने मुंह से कहे, यीशु मसीह प्रभु हैं, और तू अपने मन में यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया तो तेरा उद्धार हो जायेगा ।'' **रोमियों 10:9,10**

''किसी भी दूसरे में उद्धार निहित नहीं है। क्योंकि इस आकाश के नीचे लोगों को कोई दूसरा ऐसा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो पाये।'' **प्रेरितों के काम 4:12**

आप प्राप्त करते हैं

आप परमेश्वर को उन सभी बातों के लिये धन्यवाद देना प्रारम्भ करते हैं, जो उसने आपको प्रदान की है।

- **आप बचाये गये हैं।**

कहिये : ''परमेश्वर तेरा धन्यवाद हो। क्योंकि तूने मुझे पाप के पुराने जीवन से बचाया है। हाल्लेलूय्याह !''

- **आपने चंगाई प्राप्त की है।**

जब आप बचाये गये, तो यीशु ने आपकी बीमारी भी अपने ऊपर ले ली। ''उसके घावों के कारण आपने चंगाई पायी'' (1 पतरस 2:24) अपने शरीर में चंगाई प्राप्त करने के लिये उसे धन्यवाद देना आरम्भ कीजिये!

कहिये : ''प्रभु यीशु, तेरा धन्यवाद क्योंकि तूने मेरी बीमारी को क्रूस पर उठा लिया। मैं सभी बीमारियों से चंगाई प्राप्त करता हूं। हाल्लेलूय्याह।'' (मत्ती 8:17)

- **आप स्वतंत्र किये गये हैं।**

''यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे, तो तुम वास्तव में स्वतंत्र किये जाओगे।'' (यूहन्ना 8:36)

कहिये : ''प्रभु तेरा धन्यवाद, क्योंकि मैं सभी बंधुआई की सामर्थ्य से आजाद हूं। मैं वास्तव में आजाद हूं !!!''

स्तुति प्रशंसा का समय

अब आप परमेश्वर की स्तुति करे सब वस्तुओं के लिए।

प्रभु! वह सब जो आपने मेरे लिये किया है उसके लिये में आपका, हृदय से आभारी हूं। आप कैसे भले परमेश्वर है। आपका धन्यवाद इस आश्वासन के लिये कि अब मुझे उद्धार प्राप्त हो चुका है। यदि आज मेरी मृत्यु हो जाये, तो मुझे ज्ञात है कि मैं आपके साथ स्वर्ग में जा सकूंगा हल्लेलूय्याह!

(स्वयं परमेश्वर आपको आभार और प्रेम व्यक्त करने के उपयुक्त शब्द प्रदान करेंगे।
स्मरण रखिये : कोई भी समय स्तुति का समय हो सकता है!)

स्मरण करने का समय

परमेश्वर के वचन को कंठस्थ करके दोहराते रहिये

बाइबल से इस सप्ताह कंठस्थ करने का पद निम्न लिखित है। इसे बार-बार जोर से पढ़िये। अन्य दो पद भी चुनिये जो इसी अध्याय में आ चुके हैं, उन्हे भी कंठस्थ कीजिये।

**''यदि कोई (*अपना नाम लिखे* _____)
यीशु में है, तो वह नयी सृष्टि है, पुरानी बातें समाप्त हो गयीं। अब, सब कुछ नया बन गया है! 2 कुरिन्थियों 5:17**

बाइबल की कुन्जियों की सूचना

हमारा अगला अध्याय जीवन परिवर्तित करने वाले इन विषयों पर होगा:

- अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ्य का अनुभव कैसे करें?
- प्रेम की शक्ति
- छुडाने और स्वास्थ्य प्रदान करने वाली परमेश्वर की शक्ति!

बाइबल की कुन्जियाँ है:

✘ परमेश्वर के वचन से अधारभूत शिक्षाओं की अध्ययन श्रृंखला

✘ व्यक्तिगत अध्ययन अथवा सामूहिक अध्ययन दोनों के लिये उपयुक्त प्रणाली।

आधार है बाइबल – परमेश्वर का अनन्त वचन। इस सशक्त ग्रन्थ में धार्मिकता एवं अनन्द के रहस्य छिपे हैं जिन्हें कोई भी प्राप्त कर सकता हैं।
इनका संबंध इस जीवन से और आगामी जीवन से भी है।

अधिक जानकारी के लिये कृपया सम्पर्क करें:

बाइबल कुन्जियाँ पो.बा. **3178**, नई दिल्ली - 110 003
www: biblekeysonline.com

Copyright © 2000 Victura & InterMedia Services Ltd. All rights reserved. Printed in India 2002